अमरनाथ यात्रा 2003

हेमराज बंसल

सर्वाधिकार सुरक्षित :हेमराज बंसल

PDF Developed by GB LABS

अमरनाथ यात्रा 2003

प्रेरणा

श्री अमरनाथ जी! जन–जन की आस्था का केन्द्र!! पर जाने का साहस प्रभु कुछ लोगों में ही देता है। एक दुर्गम यात्रा। आश्चर्य है, प्रभु ने मुझे फिर तीसरी बार बुलाया। प्रेरणास्पद बना लायन्स क्लब का साथी पद्म पिपलानी। जुटते–जुटते दस व्यक्ति इकट्ठा हो गये। लायन्स क्लब के ही सुरेशचन्द जैन एवं जयप्रकाश झा। जयप्रकाश जी के रिश्तेदार एवं मेटल व्यवसायी संतोष ओझा। दुकान के पड़ौसी होम्योपैथी डाक्टर श्री आलोक जी शर्मा। ताड़ के बालाजी से जुडे भक्त जितेन्द्र गुप्ता, राकेश सोनी, रोहित गुप्ता एवं कालू मीणा। हमारा कारवां 5/8/03 मंगलवार को बारां से चल पड़ा। ताड़ के बालाजी धाम पर पूजा अर्चना कर हम सब सात बजे रवाना हुये। जम्मूतवी सुपरफास्ट कोटा से दस बजे चलती है। दो जीपों में भर कर समय से पूर्व पहुंच गये। प्लेटफार्म पर बहिन शकुंतला एवं कुंवर साहब महेन्द्र जी विदा देने आये। मिठाई नमकीन भी लाये एवं राखी भी। राखी बंधवाने की रस्म पूरी हुई। समय पर हम ट्रेन से रवाना होकर आरामदायक स्थितियों में जम्मू ता. 6/8/03 बुधवार को सायं छः बजे उतरे। रास्ते में जयप्रकाश झा ने खिरिया (जिला गुना म.प्र.) के 18 और साथी भी अमरनाथ यात्रा के लिये तैयार कर लिये। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम 4 रूपये प्रति टिकट में टैम्पो में बैठ अग्रवाल धर्मशाला में (रघुनाथ मंदिर के पास ही है) पहुंचे। अमरनाथ यात्रा रजिस्ट्रेशन के चक्कर ने हमें बहुत भटकाया। हमारे एक साथी जितेन्द्र के साथ घूम फिर पहलगांव के लिये टैक्सी, बसों की दरें तलाश की। आखिर धर्मशाला मैनेजर के मार्फत ही एक 15 सीटों वाली टैम्पो ट्रेवलर गाड़ी 200 रूपये प्रति सवारी में तय की। खीरिया के तेरह साथियों ने अमरनाथ जाने से मना कर दिया था और अब हम पंद्रह व्यक्ति ही बचे थे। रात अच्छी नींद नहीं आई। ध र्मशाला हाल में फर्श पर ही सोना पड़ा।

तारीख 07/08/03 प्रातः सात बजे उठ कर तैयार हुये। चार आदमी एम.ए. स्टेडियम पर पैदल रजिस्ट्रेशन हेतु गये पर वहां से खाली हाथ ही लौटा दिया गया।

''आप तो जाओ जी, कोई जरूरत नहीं है रजिस्ट्रेशन की।''

टैक्सी देरी से आई। इस बीच हम पांच साथी रघुनाथ मंदिर में आरती व दर्शन कर आये। सात बजे जम्मू छोड़ा। रास्ते में दृश्य बहुत लुभावना है। वैष्णोदेवी का भी यही रास्ता है। बंदरों को चने आदि ि खलाये। अन्ताक्षरी खेल समय गुजारा। जय भोले के नारे भी लगाये। साढ़े आठ बजे मिडवे पर नाश्ता किया। पत्नीटॉप के आसपास जीतू ने विडियो कैमरे से शूटिंग की। जवाहर टनल से पूर्व शैतान नाले पर लगे लंगर पर 2.30 बजे दोपहर का खाना लिया। यात्रियों के न आने से पत्नीटॉप, बटोत, रामबन आदि स्थानों पर से लंगर उठ चुके थे इसलिये हमें भोजन देरी से मिला। शाम साढ़े पांच बजे पहलगांव पहुंचे। कड़ी सुरक्षा जांच से गुजरना पड़ा। आलोक जी व जयप्रकाश जी ने बहुत ही अच्छा होटल किया। हमारी टैक्सी में आये खिरिया के पांच साथी टैक्सी से उतरते ही चन्दनबाड़ी की बस में बैठ गये थे। हम दस साथियों ने तीन कमरे दो सौ साठ रुपये प्रति कमरे के हिसाब से लिये। घंटा भर आराम कर आवश्यक कार्यों से निपट छड़ी मुबारक के दर्शन करने निकल पड़े।

छड़ी मुबारक

भोले बाबा ने जाल फेंक हमें यात्रा पर बुलाया है और सुखद संयोग का सिलसिला हमारे साथ चल रहा है। आज ही छड़ी मुबारक पहलगांव पहुंची है। पूछते हुये मंदिर स्थल पहुंचे तो आरती चल रही थी। आरती दर्शन का पूरा आनन्द लिया। यात्रियों की भीड़ बहुत कम थी। गत वर्षों में इधर बहुत रौनक रहती थी। इस वर्ष सारे लंगर एवं यात्रा बेस केंप यहां से तीन कि.मी. पहले नुनवान में बना दिये गये हैं। हमारे कई साथियों ने यहां खरीददारी की। मैं, सुरेश जी व आलोक जी शर्मा के साथ लंगर स्थल पहुंचा। बहुत चलना पड़ा। सुरेश जी को व्रत का खाना खिलाना था तथा सामान रखने हेतु क्लॉक रूम ढूंढना था। खाना तीनों ने भर पेट खाया। अब लंगरों पर क्लॉक रूम तथा यात्रियों की धर्मशाला की व्यवस्था

समाप्त कर दी गई है। बहाना सुरक्षा का है पर दबाव स्थानीय व्यापारियों का है, जिससे वे यात्रा के दौरान अच्छा खासा कमा सकें। हमारे दिलों में कश्मीरी आतंकवाद का खौफ कहीं नहीं था। रात साढ़े दस बजे होटल पहुंचे। पूरा पहलगांव अंधेरे में डूबा था पर होटल में जर्नेटर से बिजली चालू थी। क्लॉक रूम की चिंता अभी दूर नहीं हुई। होटल में 20 रूपये प्रति दिन प्रति नग दर है जो बहुत ज्यादा है। खैर रात शांति से सोये। मुझे नींद कम ही आई। तारीख 08/08/03 को प्रातः होटल मैनेजर ने 25 रूपये प्रति नग में यात्रा अवधि तक सामान रखना स्वीकार कर लिया। अतः हमने सामान पैक कर संभलवाया। चन्दनबाड़ी जाने हेतु टैक्सी भी 50 रूपये प्रति व्यक्ति में होटल में ही आ गई। इस होटल स्टॉफ से एक रात में ही हमारे अच्छे संबंध हो गये। डा. आलोक शर्मा ने होटल मैनेजर की मां का इलाज शुरू किया है। उन्हें होम्योपेथी की दवाईयां लिखवा दी है। जम्मू या श्रीनगर से मंगवा लेगें। वापसी में भी हम एक रात इसी होटल में इसी किराये में रुक सकेंगे। अभी यात्री कम होने से 700 वाले कमरे हमें सिर्फ 260 रूपये में मिले हैं। वो भी चार अतिरिक्त यात्रियों सहित।

टैक्सी ने हमें साढ़े आठ बजे चंदनबाड़ी पहुंचाया। आपसी समन्वय यहां आकर बिखर गया। जीतू, संतोष तथा रोहित उर्फ डॉली ने घोड़े से जाना तय किया। सात साथियों को पैदल चलना है। हम चार साथियों ने चन्दनबाड़ी की अत्यन्त शीतल जलधारा में स्नान भी किया। आगे लंगर न मिलने के कारण हम पांच साथी नाश्ता न कर सके पर हमारे थैलों में काफी सामान था। यात्रा साढ़े दस बजे शुरू हुई। पिस्सूटॉप से पूर्व ही बर्फ के ग्लेशियर पर चलना पड़ा। थोड़ा आगे बढ़ते ही पता चल गया कि हम कितने कमजोर हैं। पद्म पिपलानी से तो बिल्कुल धीमे चला जा रहा है। पूरे पिस्सूटॉप पर पानी व लंगर की व्यवस्था नहीं है। दो कश्मीरियों की दुकानें अवश्य हैं जो ठण्डा पेय तथा मिनरल वाटर बेच रहे हैं। हमने 80 रूपये में चार बैग टॉप पर पहुंचाने हेतु पिठ्ठू कर लिया था। एक बजे टॉप पहुंच, एक घंटा आराम किया तथा लंगर में भर पेट खाना खाया। धीमे चलने वाले साथियों के कारण काफी लेट शेषनाग पहुंचे। हमारे में सबसे पहले हमारा सबसे युवा साथी राकेश सोनी पहुंच गया था। वह दो घंटे से हमारा इंतजार कर रहा है। उसने सात आदमियों हेतु पलंग, रजाई, गद्दे सहित एक तम्बू 125 रूपये में तय कर रखा है। जामा तलाशी देने के बाद हम पलंगों पर जा पसरे। राकेश सोनी, हेमराज बंसल (मैं), जयप्रकाश, सुरेश जैन, क्रमशः पहुंचे। पद्म पिपलानी व डा. आलोक जी शर्मा के साथ कालू मीणा अंत में आया। कालू मीना सबसे तेज चलने वाला व मजबूत यात्री है। वह हमारे सब साथियों को तो सहारा दे ही रहा है, आज उसने अन्य यात्रियों की भी मदद की।

शेषनाग में बेस कैंप से लंगर चौथाई कि.मी. दूर है। प्रशासन की नीतियों के तहत लंगर में ठहरने की व्यवस्था नहीं है। बेस कैम्प में खाने की व्यवस्था नहीं है। सर्दी बहुत ज्यादा है। कुछ देर रजाई में घुसने के बाद लंगर पर खाना खाने गये। दाल, चावल, रोटी, दूध आदि उपलब्ध है। मैंने यहां आधा घंटे करीब काउंटर पर खडे हो, दाल वितरण में कार्य किया। पद्म पिपलानी के लिये खाना बेस कैम्प में ले गये। पद्म पिपलानी ने खाना बहुत कम खाया क्योंकि उसे बुखार आ गया है। काफी सारा खाना फैंका गया ।

तारीख 9/8/03 शनिवार प्रातः आराम से ही उठे। सभी साथियों ने तैयार हो लंगर में नाश्ता किया। हमें यात्रा प्रारम्भ करने तक आठ बज चुके थे। अधिकांश यात्री हमारे पूर्व आगे की यात्रा पर निकल चुके थे। रास्ते में पड़ने वाली नदी से मैंने पानी की बोतल भर ली। आगे गणेशटॉप की चढ़ाई है और रास्ते में पानी बिल्कुल नहीं है। 4 कि.मी. वावबल तक पद्म पिपलानी, जो बीमार सा चल रहा है, को मैंने अपने साथ रखा एवं हम सबसे आगे रहे। बाद में पद्म आराम के मूंड में आ गया व मैं सुरेशजी जैन तथा जयप्रकाशजी ओझा के साथ आगे बढ गया। राकेश सोनी को दो बेग दे कर घोड़े पर बिठाकर गणेशटॉप के लिये रवाना किया गया था। साथियों द्वारा बैग उठाने में कठिनाई महसूस करने से ऐसा किया गया। राकेश गणेश टॉप से दो बैग ले पैदल दो बजे पंचतरणी पहुंच गया। हम तीन साथी, मैं, सुरेशजी जैन तथा जयप्रकाशजी रुकते हुये शाम चार बजे तक पहुंचे। रास्ते में तीन कि.मी. बरसात का भी सामना करना पड़ा। भीगते हुये हम बहुत तेज चले। पीछे के साथियों की चिंता रही। पद्म का साथ होने के कारण वे (पद्म, कालू, आलोकजी) बहुत देरी से – अंधेरा होने तक पहुंच पाये। पंचतरणी में हमें

चन्दनबाड़ी से बिछुडे हमारे तीन साथी मिल गये। जीतू, डॉली व संतोष चंदनबाड़ी से घोड़े पर चलकर यात्रा हेतु रवाना हुये थे। पंचतरणी में संतोष की तबियत बिगडने से वे रात यहीं रह गये। प्रातः तीन घंटे संतोष को अस्पताल में भर्ती कर बोतल चढ़वानी पड़ी। आज तीन घंटे समय निकाल के दो साथी रोहित व जीतू दर्शन कर आये हैं। अब संतोष को हमारे हवाले कर वे आगे बढ़ेगे। हम बीमार साथी संतोष को भी दर्शन कराने का प्रयास करेंगे। डा. आलोक जी हमारे साथ हैं ही।

जीतू आदि चौधरी जी (प्रधान जी) के तम्बू में ठहरे हुये थे। मुझे यहां सोने हेतु कंबल नहीं मिल पाये। लंगर के नियमों के अनुसार कंबल रात आठ बजे बाद निकाले जाते हैं। हमें काफी सर्दी महसूस हुई। लंगर में अव्यवस्थाओं व कठिनाईयों के कारण मैंने राकेश को भेज अलग प्राइवेट तम्बू करवाया और हम रात में आराम से उसमें जाकर सो गये।

भोले के दर्शन

10/8/03 रविवार हम साथियों के आलस के कारण पंचतरणी से निकलने में पुनः लेट हुये। एक घोड़े पर संतोष को बिठाया। राकेश व कालू उसके साथ पैदल भेजे गये। हम बाकी साथी पैदल रवाना हुये। रास्ते में कई जगह बर्फ आयी। इस वर्ष पूरे यात्रा मार्ग पर रिकॉर्ड तोड बर्फ जमी हुई है। पुल रूपी बर्फ के एक किलोमीटर लम्बे रास्ते को पार करने में हमारी आत्मा सिहर उठी। एक दूसरे के इन्तजार में हम आठों साथी लेट होते चले गये। अमरगंगा नदी में स्नान किया। धुले वस्त्र धारण कर, भूखे पेट भोले के दरबार में हाजरी दी। पूजा के सामान नीचे लगी दुकानों से खरीदे। संतोष यहां सीढ़ियां भी नहीं चढ़ पाया। मिलेट्री अस्पताल में काफी सारी दवाईयां दी व आक्सीजन चढ़वानी पड़ी। फिर चार सौ रूपये में पालकी कर उसे दर्शन करवाये। हमारे दो तीन घंटे इसी में गुजर गये। अब तीन बज चुके थे। हमने तुरन्त आठ घोड़े कर नीचे बालटाल उतरना तय किया। मौसम खराब हो गया तथा सर्दी एकदम बढ़ गई। घोड़े वालों ने हमारी मजबूरी देख बहुत भाव खाये। कुछ देर बाद मैंने जोर से कहा,

''आज रात अमरनाथ जी में ही रुक जाते हैं। कल दुबारा दर्शन कर के वापस जायेंगे।''

मेरी बात सुन घोड़े वाले कुछ ठण्डे पड़े और हमें छः सौ की जगह तीन–तीन सौ रुपये में घोड़े मिल गये। सौ रुपये बीमार संतोष के लिये अतिरिक्त देने पड़े। रास्ते में तेज बारिश ने हमें भिगो दिया। काफी देर सर्दी से कांपते रहे। शाम छः से सात बजे के बीच घोड़े वालों ने हमें बालटाल उतार दिया। शिव शक्ति सेवा मंडल बुढलाना के लंगर के सामने ही मैंने अपने सब साथियों की उतार लिया। यहां भी बेस कैम्प में भोजन व्यवस्था नहीं है। बेस कैम्प अभी एक डेढ कि.मी. दूर है। लंगर वालों के यहां ठहरने की भी व्यवस्था है। हमारे पहुंचने तक यहां आरती शुरू हो गई। अतः सभी साथी कोई पौन घंटे लंगर की आरती का आनन्द लेते रहे। इसके बाद टेन्ट आरक्षित करवाने हेतु लंगर के मुख्य व्यवस्थापक के सामने मुझे कोई आधा घंटा खडा रहना पड़ा। यह समय बहुत असंतोष में कटा। मुख्य प्रबन्धक का बार–बार यह उद्घोष करना कि हम असहायों व असमर्थों की सेवा हेतु यहां बैठे हैं, मुझे बुरा लगता रहा। यहां तो समर्थ–असमर्थ सब आपके ऊपर ही निर्भर है। फिर इतना किराया खर्चा कर हजारों मील दूर से जो यात्री आ रहा है वह असहाय कैसे है? लंगर वालों को यह बात मैं लिखना चाहता था पर लिख न सका। खैर भोजन प्रसादी ग्रहण कर 28 कंबल लंगर के ले हम टेन्ट नं. 2 में सो गये। हम आठ के अतिरिक्त छः यात्री और उस टेन्ट में सोये थे। काफी देर तक हंसी मजाक भी हुई। बालटॉल से हम फोन नहीं कर सके क्योंकि यहां यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।

भोले के दर्शनों के बाद से ही पद्म पिपलानी चिन्तित रहा। उसका पर्स खो गया। बालटाल आने के बाद पता लगा कि उसका रैनकोट घोड़े वाले के साथ चला गया है। पद्म ने अपने घोड़े वाले को तरस खाकर अपना रैन कोट पहनने हेतु दे दिया था। घोड़े वाला बालटाल में सवारी उतार कर पैसे लेकर चला गया। पद्म को जब याद आई तब तक घोड़े वाले दूर जा चुके थे। काफी ढूंढने के बाद भी घ ोड़ेवाला नहीं मिल सका। हां, जयप्रकाश जी ने उसका पर्स अवश्य उसे लौटा दिया। दरअसल पद्म अपना पर्स पूजा का सामान खरीदने के बाद दुकान पर ही भूल गया था। जयप्रकाशजी की नजर उस पर पड़ गई और वे पर्स उठा लाये। पूरे रास्ते पद्म के मजे लिये। पद्म ने भोले बाबा का धन्यवाद तो किया

पर वह हमें पार्टी देने को तैयार नहीं हुआ। संतोष ओझा ने बताया कि उसने चंदनबाड़ी आते ही स्वप्रेरणा से जर्दा खाना छोड़ दिया। इससे उसे दस्त नहीं हो पाये और वह बीमार हो गया। इतनी सी बात के लिये सारे साथी कितने परेशान हुये। मैंने उससे कहा यात्रा के बाद ही छोड़ देता।

श्रीनगर

तारीख 11/8/03 सोमवार प्रातः जल्दी उठे। रात से चिंता सता रही थी। पैसा खत्म हो चुका था। सभी साथियों का जोड तोड़ कर पहलगांव बस से पहुंचने लायक किराया करीब 1200 रुपये ही हमारे पास था। संतोष की इच्छा तो टैक्सी से ही जाने की थी। मैने लंगर वालों से मदद हेतु बात की पर वे अगले दिन मुफ्त पहलगांव छुड़वाने हेतु तैयार हुये। उनका ट्रक जा रहा है। नगद राशि उधार नहीं दे सकते। आखिर हम 3300 रूपये में श्रीनगर घूमते हुये पहलगांव पहुंचाने की टैक्सी करने में सफल रहे। उससे किराया पहलगांव होटल पहुंचकर देना भी तय कर लिया। बालटाल में रोड़ नौ बजे खोला गया। इस बीच हम स्नानादि कर्मों से निवृत हुये। कई साथी पास बह रही नदी मे स्नान कर आये। प्राकृतिक दृश्य देखते हंसी मजाक करते व बैगों में रखा नाश्ता खाते पीते हम करीब बारह बजे श्रीनगर में शालीमार बाग के सामने रुके। आज सोमवार है। सभी बाग बंद रहते हैं। टैक्सी वाले ने हमारे साथ धोखा किया। हमें यह बात नहीं बताई। खैर सभी साथियों की सबसे बड़ी समस्या दाढ़ी बनाने की थी। अतः नाई की दुकान देख घुस गये। जयप्रकाश व मैं कोई आधा कि.मी. दूर स्थित नाई की दुकान पर गये। एक ही दुकान पर कितनी देर में निपट पाते। सामान्य शहर, चहल–पहल, हमारे जहन में भय नहीं। भय पैदा करने वाली इस शहर में कोई बात भी नहीं दिखाई दी। बारां राजस्थान में बैठे–बैठे भले ही हम कश्मीर व श्रीनगर को खतरनाक जगह माने पर वह खतरा यहां कहीं दिखाई नहीं देता। कई लोगों से पूछताछ व बातचीत की। सब मदद करने को तत्पर। इधर सेविंग बनाने का काम हुआ, उधर बूथ ढूंढ कर हम एक–एक कर बारां फोन कर आये। डेढ बजे करीब हम सभी साथी जीप टाटा सूमो के पास इकठ्ठे हुये। कैमरे में एक रील डलवाई गई। चौकीदार को रिश्वत दे शालीमार बाग में घुसने की हमारी कोशिश भी नाकाम रही। बाहर गेट से ही दो तीन फोटो खींच, शंकराचार्य मंदिर प्रस्थान किया।

श्रीनगर के विश्व प्रसिद्ध तीन बाग शालीमार, निशांत तथा चश्मे शाही न देख पाने का हमें अफसोस रहा। हमारी जीप डल झील के किनारे–किनारे दौड़ती शंकराचार्य मंदिर की पहाड़ी के नीचे पहुंची। बहुत तगड़ी चैकिंग के बाद जीप व यात्रियों को पहाड़ी सड़क पर जाने दिया गया। रास्ता उम्मीद से ज्यादा लंबा निकला। जीप से उतरने के बाद भी बहुत सीढ़ियां चढ़नी है। बीमार यात्री संतोष तो यह कहकर जीप में ही बैठा रहा कि मैंने यह जगह देख रखी है। आदमी मंदिर रोज–रोज जाता है, यह तो इबादत की जगह है न कि पर्यटन स्थल। संतोष की यह बात मुझे पसंद नहीं आई। बीमार व बच्चे की जिद माननी पड़ती है। आज सोमवार है, वह भी चौदस का। भगवान शिव की तिथि व वार, बरसों में एक बार ऐसा सुअवसर आता है। हम सात साथी सीढ़ियां चढ़ मंदिर पहुंचे। हममें से कई आज स्नान नहीं कर पाये थे। मैंने हाथ पैर व मुंह को अच्छी तरह धो भगवान शिव से क्षमा मांगी व दर्शनार्थ पहुंचा। नहा भी लूं तो धुले कपड़े तो हमारे पास हैं ही नहीं। अत्यन्त प्रचीन व विशाल शिवलिंग, दर्शन कर हृदय गद्गद् हो गया। सभी साथियों ने यथायोग्य पूजा अर्चना की। मंदिर के आसपास से पूरा श्रीनगर शहर दिखाई देता है। फोटोग्राफी भी की गई। यहां अमरनाथ यात्रियों के स्वागत में मुफ्त शर्बत पिलाया जा रहा है। नीचे बी.एस.एफ. द्वारा मुफ्त चाय पिलाई जा रही है। एक लंगर कल पूर्णिमा के अवसर पर, मुफ्त भोजन हेतु लगाने की तैयारी चल रही है। एक ट्रक पूरा सामानों का भरा खड़ा है। सेवफल की पचासों पेटियां सीढ़ियों के रास्ते ऊपर मंदिर में पहुंचायी जा रही है। हमें भी यहां सेवा करने का अवसर था, पर हम तो सारे बुरी तरह थके हुये थे। दर्शनार्थ चढ़ने में ही आठ दस जगह विश्राम किया था। हमने यह सेवा नहीं की। हां, सीढ़ियों के नीचे लगे लंगर में चाय अवश्य पी व प्रस्थान कर गये। अमरनाथ यात्रा व शंकराचार्य मंदिर व्यवस्था सहित अनेक धार्मिक कार्य जम्मू कश्मीर धर्मार्थ ट्रस्ट करता है। जम्मू का रघुनाथ मंदिर भी राज परिवार का ही बनाया हुआ है। सभी स्थान क्रमशः उन्नति कर रहे हैं। मैंने 1994, 1999 में भी इन स्थानों को देखा है। माता वैष्णों देवी का यहां अलग ट्रस्ट बना हुआ है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक आमदनी

है। शंकराचार्य पहाड़ी पूर्णतः वृक्षाच्छादित तथा पक्का पेवर रोड़ युक्त है। अमरनाथ यात्रियों के अतिरिक्त यहां प्रतिदिन कम ही दर्शनार्थी आते होंगे। वो भी शायद पर्यटक ही। श्रीनगर में हिन्दु आबादी 10 प्रतिशत है। आतंकवादी अकसर इस मंदिर को उड़ाने की धमकी देते रहते हैं। ऊपर से नीचे तक पूरी पहाड़ी व मंदिर क्षैत्र में कड़ी सुरक्षा लागू की गई है। मेटल डिक्टेटर के बावजूद जामा तलाशी भी दो जगह ली जाती है। इस पहाड़ी पर एक बहुत ऊंचा एंटीना टावर भी लगा हुआ है, जो कश्मीर की संचार व्यवस्था के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

हमें पहलगांव सात बजे सायं पहुंचना है। टैक्सी वाले से ऐसी ही बात हुई थी। बाग बंद होने के कारण हमने नेहरू पार्क देखना व डल झील में सैर करना तय किया। नेहरू पार्क के सामने उतरकर मैं डल झील की ओर गया। शिकारावालों ने यहां हमें बुरी तरह घेर लिया। डलझील में घूमने की दरें अत्यधिक बताई गई। आधा घंटे का एक शिकारे का एक सौ साठ रूपये किराया। चिलचिलाती धूप सहन नहीं हो रही है। डल झील व नेहरू पार्क में एक भी पर्यटक नहीं घूम रहा है। मैंने साथियों को डल झील नहीं घूमने का निर्णय सुना दिया। किनारे से ही दो–चार फोटो ले हम गाड़ी में वापस आ बैठे। वास्तव में यहां घूमने का समय सूर्यास्त से बाद का है। श्रीनगर जैसी जगह पर इतनी गर्मी हमारी कल्पना के बाहर थी। जीप ड्राईवर से कह अब हम एक वैष्णों ढाबे में पहुंचे। दुर्गानाग मंदिर परिसर में दुर्गानाग रोड़ पर चार पांच शुद्ध शाकाहारी पंजाबी भोजनालय हैं। यहां स्थित दुर्गानाग मंदिर परिसर में अब यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था भी कर दी गई है। यहां हिन्दू आबादी रहती है। आगे से कश्मीर घूमने आने वालों के लिये यहां रुकना अच्छा रहेगा। होटल मालिक जम्मू का पंजाबी हिन्दू मस्त नौजवान था। उसने हम ग्राहकों को भगवान मान हमारी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश की। खाना भी बहुत अच्छा लगा। पेटभर छककर खाया। बिल भी बहुत कम आया, 150 रुपये मात्र का। संतोष ओझा ने यहां थोडे से चावल खाये। बाद में उसके लिये डाइजीन गोली भी तलाशी। चार बज चुके हैं तथा समय के हिसाब से अब हमें श्रीनगर छोड़ना है। तीन घंटे यहां से पहलगांव पहुचने के लगेंगे ही। हमने कहीं समय व्यर्थ नहीं गंवाया। श्रीनगर अवंतीपुरा के बीच एक जगह गाड़ी रोक जयप्रकाश जी ने दो क्रिकेट बल्ले 300 रूपये में खरीदे। यहां पूरे रास्ते क्रिकेट के बल्ले की बहुत दुकानें हैं। भावताव बहुत करना पड़ता है। यहां से चल सारे रास्ते सुरक्षा बलों का अभिवादन करते कोई साढ़े छः बजे पहलगांव पहुंचे। पहलगांव इस समय आने वाले हम यात्री एक तरह से अजूबा ही थे। अमरनाथ यात्रा यहां से बंद हो चुकी है। सुरक्षा बलों के सामने पूरी घटना बयान करनी पड़ी।

''हम इधर से पैदल अमरनाथ जी गये। वहां साथी बीमार होने के कारण घोड़ों से बालटाल उतरे और अब सामान लेने वापस पहलगांव आये हैं।''

सुरक्षा जांच पूरी हुई। होटल न्यू पाइन व्यू पहुंच क्लॉक रूम से अपना सामान निकाला और कमरों में डाला। टैक्सी वाले को भाड़ा देने तक पौने आठ बजे गये। कुछ देर आराम कर, हम छः साथी अलग–अलग बाजार निकल गये। हर किसी को कुछ न कुछ खरीदना था। मैं कहीं से कुछ खरीददारी करके नहीं ले जाता हूं लेकिन मैंने भी यहां दुकानदार से प्रभावित हो केसर, शिलाजीत आदि खरीद लिये। तुरन्त ही पता लग गया कि बगल वाला दुकानदार 10 प्रतिशत कम रेट में दे रहा है पर अब क्या हो। रात साढ़े दस बजे होटल लौटे। होटल चौकीदार ने शिकायत की, होटल छोड़ने से पूर्व हमें साढे नौ बजे लौटने की हिदायत थी।

सैनिकों के साथ

12/8/03 मंगलवार रक्षाबंधन। प्रातः जल्दी उठ आलोक जी तलाश कर आये हैं– अभी रास्ता नहीं खुला है, कल से ही श्रीनगर जम्मू राजमार्ग भूस्खलन के कारण बंद है। नौ–साढे नौ बजे खबर आई कि टैक्सीयां जाने लगी हैं। बाद में ऐसी भी सूचना मिली कि बसें जा रही हैं। शायद सवारियां एक्सचेंज हो रही हों। हमारे दस में से दो साथी कल पहलगांव से निकले थे। हमने बारां उनके घर फोन कर पता किया, वे रात पत्नीटॉप में सोये हैं। मतलब सवारी उस पार तो जा रही है। रामसूं से रामबन के बीच

रास्ता टूटा था। मैं, डा0 आलोक जी व संतोष होटल में रुके, बाकी पांच साथी बाजार गये थे, मैंने उन्हें टैक्सी कर लाने हेतु कह दिया था। संतोष की तबियत खराब थी तथा उसका लगातार यही आग्रह था। हमारे सभी साथी बाजार में खरीददारी करने जा उलझे। साढ़े बारह बजे समाचार आया कि दस मिनट में सामान पैक कर बस स्टेण्ड पहुंचो, मिनी बस जा रही है। सारा सामान फैला हुआ, सामान आठ आदमियों का, पैक करने वाले पांच आदमी, आधा घंटे बाद पहुंचे तो वह बस जा चुकी थी। टैक्सीयां मात्र अनन्तनाग छोड़ रही है। बस भी अन्नतनाग से आगे नहीं जा रही। मजबूरन एक अन्नतनाग वाली बस में बैठे। सामान सारा बस की छत पर लादा गया। कुलियों ने भी अच्छा पैसा लिया। बस कोई दसेक कि.मी. दूर गई होगी कि मिलेट्री जवानों ने बस को खड़ा कर दिया और सभी पुरुष बस यात्रियों को नीचे उतरने का आदेश दे दिया। हम सभी साथी अंदर तक कांप गये। खासकर आतंकवादी हमले के डर से पर वे वास्तव में मिलेट्री वाले ही निकले। मैं भी बैग कंधे पर लटका नीचे झुका। मैंने मासूमियत से कहा,

''सर, हम तो अमरनाथ यात्री हैं।''

सुरक्षा बल वालों को ताज्जुब हुआ।

''अमरनाथ यात्री भी है इसमें? चलो अमरनाथ यात्री व बूढे लोग बस में ही बैठे रहो।''

हमें राहत मिली। हमारे आसपास मिलेट्री जवान आ जमें। कुछ और मिलेट्री जवानों को लेने बस वापस मुड़कर चार–पांच किमी. पीछे गई। खचाखच भरी बस अनन्तनाग की ओर बढ़ी। उन्हें छोडने हेतु भी दो तीन किमी. बस गली में घुसी। हमारा कोई पौन घंटा उनके साथ गुजरा। हमने मिलिट्री वालों के साथ एक फोटो भी खींचा। यात्रियों को असुविधा तो होती ही है पर बस वालों के लिये शायद यह रोज का ही काम है। एक नये अनुभव से गुजरे। दो ढ़ाई बजे करीब अनंतनाग बस स्टेण्ड पर उतरे। खन्नाबल से हमें बसें मिल सकती है व टैक्सी स्टेण्ड से टैक्सी। मैंने जोर देकर तुरन्त खन्नाबल चलने हेतु कहा। एक रेहडी चालीस रुपये में तय की, जिसमें सारे सामान लादे। संतोष ने पैदल चलने से मनाकर दिया। एक ऑटो में संतोष व जयप्रकाश जी को बिठाया, वे टैक्सी तलाशते हुये खन्नाबल बस स्टेण्ड पहुंचे। उनकी मेहनत सफल रही। कुछ महंगी ही सही, हमें 2700 रूपये में अनंतनाग से जम्मू तक की टैक्सी हो गई। खन्नाबल से हमें जम्मू जाने वाला एक नौजवान अमरनाथ यात्री और मिल गया। मुख्य चौराहा से हम नौ यात्री टैक्सी में सवार हुये। इस बीच हमने कुछ फल वगैरह खाये तथा घरों में फोन किये। अनन्तनाग जैसे खतरनाक इलाके से आखिर हम बाहर निकले। पूरे रास्ते में जाम लगा है, इसका अहसास हमें थोड़ा आगे बढ़ते ही हो गया। हजारों ट्रकों की लाइन राजमार्ग पर लगी है। थोड़ा–थोड़ा कर हम बसों के आगे निकलते रहे। यातायात में लगे पुलिस व सुरक्षाकर्मी भी छोटे वाहनों को पहले निकालने में रुचि रख रहे थे। आखिर हम टूटे रास्ते को पार कर ही गये। पूरी सड़क नीचे बैठ गई थी। पहाड़ को काटकर एक तरफा मार्ग निकाला गया

है। रामबन तक यातायात सुचारू हुआ। हम तेज गति से बढ़ने लगे। पत्नीटॉप पर हमें अंधेरा सा हो गया। भोजन हेतु हम कुद के एक शाकाहारी ढाबे में रुके। यहां हमने तसल्ली से हाथ मुंह धोये। ड्राइवर सहित कुल दस व्यक्तियों को खाना लेना था। होटल पर हमारे अतिरिक्त कोई अन्य ग्राहक भी नहीं था। करीब सभी साथी फोन करने हेतु भी गये। मेरा फोन नहीं मिल सका। आज रक्षाबन्धन का त्यौहार है, मेरी इच्छा बहिनों से बात करने की है पर समय नहीं है, जल्दी ही हमें जम्मू पहुंचना है। होटल पर बैठकर मैने दस राखियां मंगवा ली। अच्छे भोजन के बाद सबने एक दूसरे को राखी बांधी। सभी ने अपनी अपनी बहिनों को राखी के बहाने याद किया। हमारा नवां साथी एक मिठाई का डिब्बा ले आया। सबने एक–एक पीस मिठाई भी खाई। कम से कम समय में यह सभी कार्य निपटा हम आगे की यात्रा पर रवाना हो गये। भोजन के बाद सभी नींद में ऊंघने लगे। मैं भी सो गया। एक स्थान पर गाड़ी रोककर हम नीचे उतरे। पानी पेशाब हुआ। वैष्णवदेवी माताजी की ओर जाने वाला मार्ग बिजली की रोशनी से जगमगाता यहां से स्पष्ट दिखाई दे रहा था। सभी ने माता को नमन किया ओर न आने की क्षमा मांगी। रास्ते भर ड्राईवर गाडियों को ओवरटेक करता, बहुत तेज चलता रहा। एक दो बार हमारे साथियों ने उसे टोका भी। इसके बाद नियमित चल रात्रि बारह बजे हम जम्मू रेल्वे स्टेशन पर पहुंच गये। इस तरह एक खतरनाक यात्रा पूरी हुई। ड्राइवर को 2700 रुपये भाड़ा दे विदा किया। हमारा नवां साथी भी यहां हमें तीन सौ रुपये देकर

विदा हो लिया। वह बस स्टेण्ड पर रुकेगा तथा प्रातः माता के दरबार में जायेगा। उसका यह निर्णय वा. स्तव में हमारे कार्यक्रम की अनिश्चितता का ही परिणाम था। हम क्या करें, कुछ तय नहीं कर पा रहे थे। अन्यथा वह हमारे साथ रुककर प्रातः यहां से भी बस द्वारा जा सकता था। खैर पद्म पिपलानी, डा. आलोक जी कुछ दूर स्थित भवन देखकर आये। माता वैष्णोवदेवी ट्रस्ट द्वारा निर्मित सरस्वति भवन खाली था। हम सब अपना सामान उठा, कोई आधा कि.मी. पैदल चल वहां पहुंचे। मेटल डिटेक्टर के अतिरिक्त चौकीदार द्वारा भी सामानों की तलाशी ली गई। भवन अत्यन्त सुंदर व साफ है। हमें आठ पलंग 50 रूपये प्रति पलंग से दे दिये गये। पहली मंजिल पर एक बड़े हॉल में डेरा डाला। टायलेट कॉमन है। सामान जमा हमने राहत की सांस ली। यहां सारी सेवायें स्वयं ही करनी है। वाटर कूलर पेयजल के लिये उपलब्ध ा है। कोई एक डेढ़ बजे हम सब सो पाये।

हमारी यात्रा के कार्यक्रम में कश्मीर घूमना तथा माता वैष्णवदेवी के दर्शन करना शामिल था। माता के दर्शन हेतु तो सभी एकमत थे। फिर भी हम वैष्णवदेवी दरबार में नहीं जा सके। शायद माता को मंजूर नहीं था। कुछ साथियों की धारणा तो यह हो गई थी कि अब जल्दी से जल्दी घर पहुंचना है। पद्म पिप. लानी कह रहा था कि रात के रात ही वैष्णवदेवी होकर प्रातः की गाड़ी पकड़ लेते हैं, क्यों एक दिन खराब करें। पद्म की यह बात एकदम नामुमकिन थी। स्वयं पद्म ही हम में पैदल चलने में सब से ज्यादा कमजोर लग रहा था। संतोष की बीमारी ने भी हमें माता के दर्शनार्थ जाने से रोका।

13/8/03 बुधवार प्रातः जब सोकर उठे तो मैने यह प्रस्ताव रखा कि कल की ट्रेन का टिकट ले लेते हैं, आज माता जी चलते हैं पर मेरी बात को खास समर्थन नहीं मिला। यहां आकर सब की मानसिकता तुरन्त घर लौटने की हो गई। डा0 आलोक जी शर्मा व कालू मीणा की ड्यूटी टिकट की व्यवस्था हेतु लगा दी। दोनों साथी सात बजे सरस्वति भवन से नहा धो, सामान पैक कर रेल्वे स्टेशन चले गये। साढ़े आठ बजे कालू मीना ने वापस आकर फरमान सुनाया कि डा. सा. टिकट ले रहे हैं, सभी साथियों को नौ बजे तक सामान लेकर स्टेशन बुलवाया है। हमारे दो साथी तो तब तक सो ही रहे थे। संतोष को जगाने में थोडी तकलीफ आई। हमने इसी भवन में स्थित भोजनालय में चाय नाश्ता किया। सारे सामान एक ऑटो में लाद उसमें संतोष व कालू को बिठाकर हमने स्टेशन रवाना किया व बाकी पांच साथी हम पैदल गये। ऑटो स्टेण्ड पर हमारे सामान उतार दोनों साथी इंतजार करते रहे व हम उन्हें रेल्वे स्टेशन के आसपास ढूंढते रहे। कुछ देर असमंजस की स्थिति रही। आखिर सब मिले ही। कुलियों ने सामान प्लेटफार्म पर ले जाने के एक सौ बीस रूपये मांगे, जो हमें ज्यादा लगे। लिहाजा सामान हम स्वयं ही उठाकर प्लेटफार्म नं. दो पर ले गये। हमें जम्मू से दिल्ली तक जम्मूतवी हापा स्वराज एक्सप्रेस में एस. वन. कोच में रिजर्वेशन मिला है। दिल्ली से कोटा की अब और चिंता थी। डा. सा. को हमने पुनः दिल्ली कोटा देहरादून एक्सप्रेस का टिकट तलाशने भेजा पर लाइन लंबी होने तथा समय कम होने के कारण वे टिकट नहीं ला सके। खैर होनी को और अच्छा ही होना मंजूर था।

अमरनाथ की यात्रा सफलतापूर्वक समाप्त कर हमने 13/8/03 बुधवार को साढ़े ग्यारह बजे जम्मू छोड़ा। गाड़ी खाली पड़ी थी। हम आठ आदमियों के पास सोलह सीटें थी। फैलपसर कर बैठे। दिन भर कुछ न कुछ खाते पीते रहे, ताश भी खेली। टिकट चैकर आया तो उससे दिल्ली से आगे टिकट दिलवाने का निवेदन कर दिया। शाम पड़ते–पड़ते गाड़ी कंडक्टर दुबारा आया। टिकट बनाने को तैयार था पर सौ रुपये प्रति टिकट अतिरिक्त मांगे। सभी को गुस्सा आया। पूरे रास्ते अमरनाथ यात्रियों से इतनी सहानूभूति और यहां यह कंडक्टर लूट रहा है। खैर सुरेशजी ने पचास रुपये टिकट एक्स्ट्रा देना स्वीकार कर लिया। घंटे दो घंटे बाद वापस आकर भोलेनाथ का अहसास कराकर वह हमारे टिकट कोटा तक के बना गया। टुकड़ों में टिकट बनने के कारण वापसी यात्रा पर हमारा खर्च 373 रूपये प्रति टिकट की जगह 520/– प्रति टिकट हुआ। हम अभी तक इतना ज्यादा खर्च होने का कारण नहीं जान सके। खैर खर्च हो गया पर सफर आसान हो गया। दिल्ली से पूर्व ही हम कोच एस–5 व एस. 6 में आ गये। जहां हमारी चार–चार सीटें थी। दिल्ली में खाना खा कर सो गये। प्रातः किसी साथी ने जगाया कि उठो कोटा आ गया। प्लेटफार्म पर उतर लुंगी बिछाकर बैठ गये, कालू मीना को बस स्टेण्ड जीप करने हेतु भेज दिया। जीप भी जल्दी ही आ गई। सभी साथी अपना अपना सामान उठा प्लेटफार्म से बाहर आ जीप में बैठ गये।

पूरे रास्ते हंसते हंसाते मस्ती करते सात बजे करीब बारां पहुंचे। जीप से मैं प्रताप चौक उतरा, सभी साथियों से विदा ले सामान उठा घर पहुंचा।

सबक

अमरनाथ यात्रा वर्ष 2003 किस तरह सम्पन्न हो गई, एक आश्चर्य बन गया। मेरा जाने का विचार नहीं। फिर आई बाधाओं में मैं उलझ गया। यदि मैं यात्रा रद्द कर दूं तो संभव है बाकी नौ साथी भी न जाते, मैं मना न कर सका। यात्रा में कई साथी मेरे से अपरिचित तथा आदर्श संख्या से ज्यादा का हमारा ग्रुप। इसके कारण भी परेशानियां आई। बारां से निर्धारित लक्ष्य भी हम पूरा न कर सके। पर समन्वय बना सब हंसी खुशी वापस लौटे। यह सोचकर संतुष्ट हूँ कि बस ईश्वर को इतना ही मंजूर होगा। पूर्व में भी यात्राओं से कुछ सबक लिये थे। इससे भी लिये हैं। कुछ लिख देता हूं।

1. एक ग्रुप में चार से छः साथियों की संख्या आदर्श संख्या है। अधिक संख्या होने पर दो या अधिक ग्रुप बनाने चाहिये।

2. सभी साथियों की विचारधारा, शारीरिक क्षमता एवं आर्थिक स्थिति में लगभग समानता होनी चाहिये।

3. पूरी यात्रा का कार्यक्रम लौटने तक का निर्धारित होना चाहिये। इसी हिसाब से वापसी टिकट होना चाहिये। पूर्व में ही सभी साथी इस कार्यक्रम पर चलने का वचन दें।

4. पहाड़ों पर यात्रा प्रातः यथासंभव जल्दी शुरू कर, दोपहर तक समाप्त कर देनी चाहिये, बाद में मौसम खराब हो जाता है।

5. वफादार मित्रों को ही यात्रा में साथी बनाया जाना चाहिये। मुसीबत में साथ छोड़ देने वाले साथी ढूंढने से अच्छा है, अकेले ही यात्रा पर जायें।

6. जितना बड़ा दल होता है, उतना ही ज्यादा समय नष्ट होता है। यात्रा में हर जगह विलंब होता है।

7. पैदल यात्रा में एनवक्त पर अपने पास रखा सामान ही काम आता है। अतः अपने आवश्यक सामान का बोझ स्वयं ही उठाकर चलना चाहिये।